बौद्ध दर्शन- चार आर्य - सत्य(Four Noble Truths)

By- Dr. Arun Kumar Sinha
Asso. Professor, Philosophy Department
Raja Singh College, Siwan

(For Part- 1 Hons./Subs. Students)

तृतीय आर्य-सत्य- दु:ख निरोध (There is cessation of suffering)

द्वितीय आर्य सत्य में बुद्ध ने दुख के कारणों को माना है। जब दुख के कारण की जानकारी हो जाती है तब तो यह समझना ही चाहिए कि कारणों के नाश हो जाने पर दु:ख का भी नाश होना संभव है। दु:ख नाश की स्थिति को 'दु:ख निरोध' कहते हैं यही निर्वाण है। निर्वाण शब्द का अर्थ होता है 'बुझा हुआ' दु:खों का बुझ जाना ही निर्वाण है। निर्वाण राग, द्वेष तथा उसके नाश की अवस्था है। इसे मोक्ष और मुक्ति भी कहते हैं यह सांसारिक बंधनों से छूट जाने की स्थिति होती है । निर्वाण को पाली में 'निब्बान' कहा जाता है ।भारत के अन्य दार्शनिकों ने जिसे मोक्ष कहा है उसे ही बौद्ध दर्शन में निर्वाण की संज्ञा से विभूषित किया गया है । निर्वाण और मोक्ष समानार्थक हैं ।निर्वाण को बौद्ध दर्शन में चरम लक्ष्य के रूप में माना गया है।

निर्वाण जिसे बुझना कहा गयाहै वह जिस प्रकार हवा के झोंके से दीपक की लौ बुझ जाती है और उसकी सत्ता नहीं रहती उसी प्रकार देहऔर चित्त से मुक्त होने पर मुनि लुप्त हो जाता है उसकी सत्ता नहीं रहती ।मनोविकारों को आग कहा गया है मनोविकारों को शांत होने की अवस्था आग के बुझ जाने के तुल्य है ।निर्वाण वह अवस्था है जिसमें लोभ, घृणा ,क्रोध और मोह का उपशम हो जाता है निर्वाण भाव निरोध की स्थिति है ।पिटको में बार-बार अग्नि के जलने और बुझने की बात कही गई है मनोविकारों से युक्त पुरुष का अग्नि में जलना कहा गया है । निर्वाण को सितिभावभ अर्थात आग का ठंडा होना भी कहा गया है। निर्वाण में मनोविकार पूरी तरह से शांत हो जाते हैं और दु:ख लेश मात्र भी नहीं रहता । इस जीवन में भी निर्वाण की प्राप्ति संभव है इस जीवन में भी दुखों का पूरी तरह निरोध किया जा सकता है ।निर्वाण का अर्थ स्वर्ग नहीं है जो मृत्यु के बाद ही प्राप्त हो ।यह इस जीवन में भी प्राप्त है ।निर्वाण में अहंकार, मामाकार से मुक्ति मिल जाती है। बुद्ध ने अपने जीवन काल में ही निर्वाण प्राप्त कर लिया था । इस बात का कोई कारण नहीं है कि दूसरे लोग भी इस जीवन में निर्वाण प्राप्त न कर सकें ।निर्वाण निष्क्रियता नहीं है, निर्वाण होने पर सक्रिय बौद्धिक और सामाजिक जीवन बिताया जा सकता है । स्वयम बुद्ध ने निर्वाण प्राप्ति के बाद 45 वर्षों तक इस तरह का जीवन बिताया था । निर्वाण कर्म सन्यास नहीं है बल्कि रोग द्वेष और मोह से मुक्त होकर कर्म करना है इसमें त्याज्य उन चीजों का करना होता है जो पुनर्जन्म के

कारण है ,अर्थात इसमें तृष्णा ,जीवन की इच्छा ,का नाश करना होता है ।निर्वाण होने पर भौतिक देह तो रहती है लेकिन त्रिष्णा का बिल्कुल नाश हो जाता है ।निर्वाण की अवधारणा उपनिषदों की जीवन मुक्ति की धारणा के तुल्य है अंतर केवल इतना है कि बौद्ध आत्मा को नित्य नहीं मानते ।निर्वाण में कारण श्रृंखला का सदा के लिए अंत हो जाता है। निर्वाण प्राप्त पुरुष के पुनर्जन्म की तृष्णा नष्ट हो जाती है और कोई नई तृष्णा उसके अंदर पैदा नहीं होती तथा वह दीपक की तरह बुझ जाता है।

निर्वाण शब्द को लेकर विद्वानों में दो तरह केविचार देखने को मिलते हैं।कुछ विद्वानों ने इसका शाब्दिक अर्थ बुझा हुआ (Blown out) के रूप में लगाया तो कुछ निर्वाण का अर्थ शीतलता(Cooling) के रूप में।जिन विद्वानों ने निर्वाण को बुझा हुआ बतलाया उसे निषेधात्मक मत(Negative Conception और जिन्होंने इसे शीतलता के रूप में लिया उसे भावात्मक मत(Positive Conception)कहा जाता है।

निर्वाण की व्याख्या एक उपमा के द्वारा भी की गई है जिसे बौध्द धर्म के प्रमुख उपदेशकों में से एक नागसेन ने यूनान के राजा मिलिन्द के सामने रखा-निर्वाण को उन्होंने सागर की तरह गहरा, पर्वत की तरह ऊँचा और मधु की तरह मधुर कहा है।इसके साथ ही उन्होंने ने यह भी कहा है कि निर्वाण के स्वरूप का ज्ञान उसे ही हो सकता है जिसे इसकी अनुभूति हुई हो ।जिस प्रकार अन्धे को रंग का ज्ञान कराना सम्भव नहीं है उसी तरह उसे जिसको इसकी अनुभूति न हो ज्ञान सम्भव नहीं है।

अंत में यह कहा जा सकता है कि निर्वाण वह अवस्था जिसमें मानव आनन्द को प्राप्त कर लेता है तथा उसका मन स्थिर हो जाता है।उसे आर्य सत्यों का ज्ञान हो जाता है।इससे उसके सभी दु:खों का एवं उसके कारणों का भी अन्त हो जाता है।इससे पुनर्जन्म की सम्भावना अर्थात जन्म ग्रहण के बन्धन से मुक्त हो जाता है।उसका शेष जीवन शांतिपूर्ण होता है।